International Journal of Research - GRANTHAALAYAH
February 2026 14(2SCE)
समकालीन कला, साहित्य, संगीत एवं नृत्य का विज्ञान एवं समाज विज्ञान से अंतर्संबंध
www.granthaalayah.com

Original Article

TRIBAL ART RATHWA MURALS FEATURED ON COMMEMORATIVE POSTAGE STAMPS

स्मारकीय डाक टिकटों पर जनजातीय कला राठवा भित्तिचित्रों की छाप

Dr. Vinay Patel [1*]
[1] Assistant Professor, School of Art and Architecture Fine Arts, Sushant University, Gurugram, Haryana, India

ABSTRACT

English: This art reflects the civilization, culture, and spiritual beliefs of the Bhils and the Bhil tribe. This art is primarily created by the local residents of Gujarat and Madhya Pradesh. It is not a painting, but the last remaining vestige of a bygone era. It continues to breathe its last through its lines, colors, shapes, and various mediums. This art is a trace of a bygone era that flourished in the lap of nature centuries ago. Rathwa murals are a vibrant, sacred, and historic art. Which depicts the life, spirituality and cultural heritage of the Rathwa tribe on the wall. This art was depicted in the form of memories of their ancestors and cosmic symbols. To highlight the importance and uniqueness of this art, the Indian Postal Department released a commemorative postage stamp on it in 1999.

My research highlights the significance of Rathwa art and its cultural, economic, political, and environmental aspects. This paper explores the interrelationship between tribal art and the National Philatelic Collection in India, which honors Rathwa mural painting, the traditional art of the Rathwa tribal community of Gujarat. This study contextualizes the cultural significance of the art (locally known as Pithora), analyzes the origins of the stamp in the context of India Post's broader thematic issues on tribal arts and crafts, and discusses the implications for cultural preservation and heritage recognition.

Hindi: यह कला भील और भील जनजातीय की सभ्यता, संस्कृति और अध्यात्मिक आस्था को दर्शाती है। यह कला मुख्य रूप से गुजरात और मध्यप्रदेश के स्थानीय निवासियों द्वारा बनाई जाती है। यह पेंटिंग नही है बल्कि उस बीते हुए समय की आखिरी बची हुई निशानी है। जो आज भी अपने रेखा, रंगए रूप, आकार-प्रकार माध्यमों के द्वारा अपनी अंतिम सांसे ले रही है। यह कला उस बीते हुए कल की छाप है जो सदियों पहले प्रकृति के आँचल में पल्लवित हो रही थी। राठवा भित्तिचित्र एक जीवंत, पवित्र और ऐतिहासिक कला है जो राठवा जनजाति के जीवन, उनकी आध्यात्मिकता और उनकी सांस्कृतिक विरासत को दीवार पर उकेरती है। यह कला अपने पूर्वजों की यादों और ब्रम्हांडीय प्रतीकों के रूप में चित्रित की गयी थी। इस कला की महत्ता और उनकी विशेषता को बतलाने के लिए भारतीय डाक विभाग में सन 1999 में इसके ऊपर एक स्मारकीय डाकटिकट का विमोचन किया।

मेरा यह शोध राठवा कला और उसके सांस्कृतिक, आर्थिक, राजनैतिक और कई वातावरणीय पहलुओं की विशेषताओं को उजागर करते हुए उनकी अहमियत को दर्शाता है। यह शोधपत्र भारत में जनजातीय कला और राष्ट्रीय डाक टिकट संग्रह के अंतर्संबंध की पड़ताल करता हैए जिसमें गुजरात के राठवा आदिवासी समुदाय की पारंपरिक कला, राठवा भित्ति चित्रकला को सम्मानित किया गया है। यह अध्ययन कला (जिसे स्थानीय रूप से पिथोरा के नाम से जाना जाता है) के सांस्कृतिक महत्व को संदर्भ में रखता है, जनजातीय कला और शिल्प पर इंडिया पोस्ट के व्यापक विषयगत मुद्दों के संदर्भ में डाक टिकट की उत्पत्ति का विश्लेषण करता है, और सांस्कृतिक संरक्षण तथा विरासत मान्यता के निहितार्थों पर चर्चा करता है।

*Corresponding Author:
Email address: Dr. Vinay Patel (vinaypatelbhu@gmail.com)

Received: 26 December 2025; **Accepted:** 28 January 2026; **Published** 28 February 2026
DOI: 10.29121/granthaalayah.v14.i2SCE.2026.6766
Page Number: 235-239
Journal Title: International Journal of Research -GRANTHAALAYAH
Journal Abbreviation: Int. J. Res. Granthaalayah
Online ISSN: 2350-0530, **Print ISSN:** 2394-3629
Publisher: Granthaalayah Publications and Printers, India
Conflict of Interests: The authors declare that they have no competing interests.
Funding: This research received no specific grant from any funding agency in the public, commercial, or not-for-profit sectors.
Authors' Contributions: Each author made an equal contribution to the conception and design of the study. All authors have reviewed and approved the final version of the manuscript for publication.
Transparency: The authors affirm that this manuscript presents an honest, accurate, and transparent account of the study. All essential aspects have been included, and any deviations from the original study plan have been clearly explained. The writing process strictly adhered to established ethical standards.
Copyright: © 2026 The Author(s). This work is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.
With the license CC-BY, authors retain the copyright, allowing anyone to download, reuse, re-print, modify, distribute, and/or copy their contribution. The work must be properly attributed to its author.

Keywords: Commemorative Stamps, Historical, Economic, Cultural, Political, Philosophical and Artistic Features, स्मारकीय डाक टिकट, ऐतिहासिक, आर्थिकए सांस्कृतिक, राजनैतिक, दार्शनिक और कलात्मक विशेषता।

प्रस्तावना

स्मारक डाक टिकट न केवल डाक मुद्रा के रूप में कार्य करते हैं, बल्कि सांस्कृतिक स्मृति और पहचान के वाहक भी होते हैं | वे राष्ट्रीय विरासत के तत्वों को प्रतिबिंबित करते हैं, और भारत जैसे देशों में, अक्सर विविध कला रूपों और शिल्पों को प्रदर्शित करने के लिए उपयोग किए जाते हैं | अक्टूबर 1999 में, भारतीय डाक ने राठवा भित्ति चित्रों को समर्पित एक स्मारक डाक टिकट जारी किया | यह राठवा समुदाय द्वारा प्रचलित एक पारंपरिक आदिवासी कला है | राठवा भित्तिचित्र, जिन्हें आमतौर पर पिथोरा चित्रकला के नाम से भी जाना जाता है | यह समुदाय गुजरात के पूर्वी क्षेत्र (विशेषकर छोटा उदयपुर, पंचमहल और वडोदरा जिले) और पश्चिमी मध्य प्रदेश के कुछ हिस्सों में निवास करते है | राठवा लोग पारंपरिक रूप से कृषि प्रधान और वन-निर्भर लोग हैं, जिनका सामाजिक जीवन प्रकृति, आध्यात्मिकता और पूर्वजों की पूजा एवं भावनात्मकता की गहराई से जुड़ा हुआ है | पिथोरा चित्रकला की जड़ें प्रागैतिहासिक और स्वदेशी हैं, जो प्रारंभिक मानव की उन प्रवृत्तियों से विकसित हुई जिनमें विश्वासों, अनुष्ठानों और जीवन-यापन के अनुभवों को दीवारों पर अंकित किया जाता था | विद्वान अक्सर इन भित्तिचित्रों को प्राचीन चट्टानी और गुफा चित्रकला परंपराओं से जोड़ते हैं, जो बाद में घरेलू स्थानों में अनुष्ठानिक भित्तिचित्रों में परिवर्तित हो गईं |

अनुसंधान क्रियाविधि

यह अध्ययन डाक टिकटों पर राठवा भित्तिचित्र (पिथोरा कला) के चित्रण की जांच करने के लिए गुणात्मक वर्णनात्मक अनुसंधान पद्धति को अपनाया गया है | डेटा प्राथमिक स्रोतों से एकत्र किया गया है, जिनमें राठवा भित्तिचित्र वाले डाक टिकट, प्रथम-दिवसीय कवर और आधिकारिक डाक प्रकाशन शामिल हैं, और द्वितीयक स्रोतों जैसे कि जनजातीय कला और भारतीय डाक टिकट संग्रह पर पुस्तकें, पत्रिकाएँ, कैटलॉग और ऑनलाइन डेटाबेस शामिल हैं | कार्यप्रणाली में टिकट के रूपांकनों, रंगों, संरचना और प्रतीकों का अध्ययन करने के लिए दृश्य सामग्री विश्लेषण और डाक टिकट डिजाइन में कला रूप के अनुकूलन और रूपांतरण को समझने के लिए पारंपरिक राठवा भित्तिचित्रों के साथ तुलनात्मक विश्लेषण शामिल है | डाक टिकटों पर राठवा भित्तिचित्रों के चित्रण के सांस्कृतिक महत्व और विरासत संरक्षण में इसकी भूमिका का आकलन करने के लिए व्याख्यात्मक विश्लेषण का उपयोग किया गया है | स्वदेशी सांस्कृतिक प्रतीकों की व्याख्या करते समय नैतिक पहलुओं का ध्यान रखा गया है | यह अध्ययन उपलब्ध डाक टिकट सामग्री और प्रलेखित स्रोतों तक सीमित है |

राठवा भित्तिचित्रों की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

राठवा समुदाय और पिथोरा भित्तिचित्र: गुजरात के छोटा उदयपुर और पंचमहल जिलों में रहने वाले राठवा आदिवासी, पिथोरा नामक विस्तृत अनुष्ठानिक भित्तिचित्र बनाते हैं | ये केवल कलात्मक अभिव्यक्ति नहीं हैं, बल्कि उस समुदाय के अनुष्ठानिक जीवन और ब्रह्मांडीय मान्यताओं में गहराई से समाहित हैं | पिथोरा कला प्राचीन और अनुष्ठानिक है, जिसकी जड़ें मध्य गुजरात और मध्य प्रदेश के कुछ हिस्सों में रहने वाली राठवा, भील और उनसे संबंधित जनजातियों के सदियों पुराने आदिवासी जीवन में निहित हैं | ऐतिहासिक रूप से, ये भित्तिचित्र गुफाओं या चट्टानों पर बने चित्रों से विकसित होकर घरेलू दीवारों पर कला के रूप में उभरे और स्वदेशी अभिव्यक्ति का अभिन्न अंग बन गए | एक अनुष्ठानिक कला रूप के रूप में विकास कई लोक कलाओं के विपरीत, जिनका विकास मुख्य रूप से सजावट के लिए हुआ | राठवा भित्ति चित्रकला का विकास एक पवित्र और अनुष्ठानिक प्रथा के रूप में हुआ | ये चित्र रथवा लोगों के प्रमुख देवता बाबा पिथोरा को समर्पित हैं, जिन्हें समृद्धि, उर्वरता, स्वास्थ्य और सामाजिक सद्भाव का रक्षक और प्रदाता माना जाता है |

ऐतिहासिक रूप से, पिथोरा चित्रों का निर्माण निम्न उद्देश्यों के लिए किया जाता था | देवता से की गई मन्नत (मन्नत) को पूरा करने के लिए इच्छा पूरी होने पर बाबा पिथोरा को धन्यवाद देने के लिए जीवन की महत्वपूर्ण घटनाओं जैसे कि बच्चे का जन्म, विवाह या बीमारी से ठीक होने के दौरान इस प्रकार, यह कला रूप एक स्वतंत्र सौंदर्यपरक गतिविधि के बजाय राठवा कला आध्यात्मिक जीवन का एक अभिन्न अंग बन गया | पारंपरिक प्रथा और सामाजिक संरचना पारंपरिक राठवा समाज में केवल प्रशिक्षित पुरुष चित्रकारों, जिन्हें लखारा या लेखारा कहा जाता था, को ही पिथोरा भित्ति चित्र बनाने की अनुमति थी | यह अनुष्ठान एक बड़वा (आदिवासी पुजारी या तांत्रिक) की देखरेख में किया जाता था, जो शुभ समय का निर्धारण करता था और आध्यात्मिक प्रक्रियाओं का मार्गदर्शन करता था | महिलाएं मिट्टी, गोबर और चूने की परतों से दीवार को तैयार करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती थीं - इस प्रक्रिया को लिपाई कहा जाता था | मुख्यतः यह चित्रकला आमतौर पर घर की तीन दीवारों पर की जाती थी, जो ब्रह्मांडीय व्यवस्था का प्रतीक थी: दिव्य जगत, मानव जगत, पूर्वजों/प्राकृतिक जगत | यह संरचना राठवा लोगों के समग्र वैश्विकदृष्टिकोण को दर्शाती है |

राठवा चित्रकला की उत्पत्ति, महत्व व सांस्कृतिक प्रतीक का विकास

राठवा/पिथोरा चित्रकलाएँ पारंपरिक रूप से लोगों के घरों में बाबा पिथोरा (प्रमुख देवता) के सम्मान में और शुभ अवसरों जैसे प्रतिज्ञाओं की पूर्ति, मौसमी त्योहारों या जीवन के महत्वपूर्ण पड़ावों को चिह्नित करने के लिए बनाई जाती हैं | बहु-पैनल वाली ये रचनाएँ प्रतीकात्मकता से भरपूर होती हैं, जिनमें अक्सर घोड़े, जानवर, ब्रह्मांडीय प्रतीक और सामुदायिक जीवन के दृश्य चित्रित होते हैं | परंपरागत रूप से, केवल प्रशिक्षित पुरुष चित्रकार (लखड़ा या लेखर) ही ग्राम पुजारी (बड़वा) के मार्गदर्शन में यह कार्य करते हैं, जबकि अविवाहित महिलाएँ प्रारंभिक प्लास्टरिंग का कार्य करती हैं | जबकि सामुदायिक कार्यों में इस बात पर जोर दिया गया है कि अनुष्ठानिक पहलू कलात्मक कौशल जितना ही महत्वपूर्ण होता है | एक पिथोरा के निर्माण में सामुदायिक भागीदारी, आत्माओं का आह्वान और गीत शामिल होते हैं,

जो इसे एक फोटो-यथार्थवादी कला रूप के बजाय एक जीवंत मौखिक-दृश्य परंपरा बनाते हैं | सांस्कृतिक प्रतीक के रूप में विकास समय के साथ, पिथोरा की तकनीकें और रूपांकन पौराणिक कथाओं, ब्रह्मांड विज्ञान, जनजातीय भौगोलिक-सामाजिक पहचान और रोजमर्रा की जिंदगी के कथात्मक चित्रण में विकसित हुए | यह कला मुख्य रूप से जनजातीय घरों तक ही सीमित थी, और हाल के दशकों में ही इसे सार्वजनिक प्रदर्शनियों और संग्रहालयों में प्रदर्शित किया गया है, और डाक टिकटों जैसे राष्ट्रीय माध्यमों के माध्यम से इसे प्रमुखता दी गई है | मौखिक परंपरा के माध्यम से निरंतरता की सदियों तक, राठवा भित्तिचित्रों का लिखित रूप में कोई दस्तावेजीकरण नहीं था | प्रतीकों, मिथकों, रंगों के अर्थों और रचना का ज्ञान एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक मौखिक रूप से हस्तांतरित होता रहा | गीत, कहानियाँ, अनुष्ठान और सामुदायिक भागीदारी ने कला की निरंतरता सुनिश्चित की | इस मौखिक प्रसारण ने इस कला को संरक्षित किया | पौराणिक कथाएँ, जनजातीय इतिहास, पारिस्थितिकी ज्ञान, सामाजिक मूल्य और नैतिकता परिणामस्वरूप, पिथोरा चित्र जनजातीय स्मृति और पहचान के दृश्य अभिलेख बन गए |

राठवा भित्तिचित्र डाक टिकट, डिज़ाइन और सौंदर्य संबंधी विशेषताएं

भारतीय डाक विभाग द्वारा राठवा भित्तिचित्र (यूनिवर्सल पोस्टल यूनियन - ग्रामीण कला एवं शिल्प पारंपरिक श्रृंखला का भाग) पर डाक टिकट जारी करने की तिथि: 9 अक्टूबर 1999 है | इस टिकट का मूल्यवर्ग: ₹3.00 है | इस डाक टिकट की मुद्रण प्रक्रिया: फोटोग्रेव्योर तकनीक में किया गया है | इस टिकट की श्रृंखला में बने चित्र ग्रामीण कला एवं शिल्प पर केंद्रित स्मारक विषयगत अंक है | यह अंक कई भारतीय कला रूपों को सम्मानित करने वाले एक विषयगत सेट का हिस्सा था, जो वैश्विक मंच पर स्वदेशी सांस्कृतिक अभिव्यक्ति को उजागर करने के लिए इंडिया पोस्ट के प्रयास का संकेत देता है, जो यूनिवर्सल पोस्टल यूनियन के सांस्कृतिक आदान-प्रदान और विरासत मान्यता के लक्ष्यों से संबंधित है | इस डाक टिकट के डिज़ाइन में आमतौर पर पिथोरा कला के विशिष्ट तत्व शामिल होते हैं जो जीवंत, शैलीबद्ध आकृतियाँ और सशक्त रचना है जो राठवा समुदाय की व्यापक सांस्कृतिक कथा का प्रतिनिधित्व करते हैं | यद्यपि कैटलॉग और प्रिंट के अनुसार डिज़ाइन के सटीक तत्व भिन्न होते हैं, बहुरंगी फोटोग्राव्योर तकनीक एक लघु प्रारूप में प्रामाणिक आदिवासी दृश्य भाषा को व्यक्त करने के सुनियोजित प्रयास को दर्शाती है | यह डाक टिकट यूनिवर्सल पोस्टल यूनियन (यूपीयू) की 125वीं वर्षगांठ के उपलक्ष्य में जारी किया गया था | यह यूपीयू एक अंतरराष्ट्रीय संगठन है जिसका गठन 1874 में हुआ था और तब से यह अपने सदस्य देशों के बीच वैश्विक डाक सेवाओं के समन्वय और सुगमीकरण के लिए बनाया गया है | इस डाक टिकट में भारत की ग्रामीण कला और शिल्प परंपराओं को दर्शाया गया है, जो देश की सांस्कृतिक विरासत का जश्न मनाता है | इस डाक टिकट का डिजाईन भारतीय डाक विभाग द्वारा किया गया है | यह टिकट भारतीय सेक्युरिटी प्रेस नासिक द्वारा छापा गया है | इस टिकट पर कोई भी जल चिन्ह अंकित नहीं है | मुद्रित टिकटों की संख्या 1 लाख प्रति पत्रक है वेध का आकार 13X13 है |

चित्र 1

चित्र 1 राठवा भित्तिचित्र

राठवा भित्तिचित्रों के डाक टिकट का सांस्कृतिक महत्व

राठवा भित्तिचित्रों वाले डाक टिकट का जारी होना भारत की राष्ट्रीय विरासत में जनजातीय कलाओं को मान्यता प्रदान करता है | डाक टिकट संग्रह के माध्यम से इस तरह का प्रतिनिधित्व न केवल पिथोरा जैसी कम ज्ञात कलाओं को दृश्यता प्रदान करता है, बल्कि राठवा और संबद्ध जनजातियों की पहचान को भी मजबूत

करता है | यह पहल व्यापक वैश्विक रुझानों के अनुरूप है, जहां डाक सेवाएं अमूर्त सांस्कृतिक विरासत को बढ़ावा देने के लिए स्मारक डाक टिकटों का उपयोग करती हैं | सांस्कृतिक महत्व यह है कि अनुष्ठान और विश्वास प्रणालियाँ पिथोरा चित्रकला केवल सजावटी नहीं है बल्कि जनजातीय आध्यात्मिक जीवन के गहराई से जुड़ी हुई है | यह मन्नतें पूरी करने, जनजातीय प्रमुख देवता बाबा पिथोरा को धन्यवाद अर्पित करने, या स्वास्थ्य, समृद्धि और सुरक्षा के लिए आशीर्वाद प्राप्त करने के लिए चित्रित की जाती है | अनुष्ठानों में अक्सर एक बड़वा (पुजारी/शमन) शामिल होता है जो मंत्रोच्चार, ढोल बजाने और चित्रकला के लिए पवित्र समय निर्धारित करने के माध्यम से समुदाय का मार्गदर्शन करता है | यह कला जन्म, विवाह और महत्वपूर्ण मौसमी या जीवन के पड़ावों जैसे सामाजिक अनुष्ठानों से भी जुड़ी हुई है | आधुनिक दुनिया से परिचय 20वीं शताब्दी के मध्य तक, राठवा भित्तिचित्र आदिवासी घरों तक ही सीमित रहे और बाहरी दुनिया के लिए लगभग अज्ञात थे | औपनिवेशिक और स्वतंत्रताकाल में मानव विज्ञान, जनजातीय अध्ययन और लोक कला प्रलेखन के विकास के साथ, शोधकर्ताओं और कला इतिहासकारों ने पिथोरा चित्रकला को एक विशिष्ट आदिवासी कला परंपरा के रूप में मान्यता देना शुरू किया | धीरे-धीरे: कलाकारों ने प्रदर्शनियों और बाजारों के लिए कागज, कपड़े और कैनवास पर चित्र बनाना शुरू किया | सरकार और सांस्कृतिक संस्थानों ने शिल्प मेलों, संग्रहालयों और प्रकाशनों के माध्यम से इस कला को बढ़ावा दिया | इस परंपरा को राष्ट्रीय मान्यता मिली, जिसका चरम बिंदु 1999 में भारतीय स्मारक डाक टिकटों में इसका समावेश था, जो राठवा विरासत की आधिकारिक मान्यता का प्रतीक है |

राठवा भित्तिचित्रों का प्रतीकवाद और प्रतिमा विज्ञान

पिथोरा भित्तिचित्रों में समृद्ध रूपांकन हैं, जिनमें से प्रत्येक का अपना सांस्कृतिक महत्व है | सात अलंकृत घोड़े राठवा की जन्मभूमि के आसपास की पौराणिक सात पहाड़ियों का प्रतिनिधित्व करते हैं | जबकि सूर्य, चंद्रमा, पशु, मानव आकृतियाँ, प्रकृति, पूर्वज और अनुष्ठान - ये सभी ब्रह्मांडीय व्यवस्था और जनजातीय कथाओं को दर्शाते हैं | खेती, शिकार और नृत्य जैसी दैनिक गतिविधियों के चित्रण सामाजिक एकता और जीवन चक्र को दर्शाते हैं | ये तत्व प्रतीकात्मक रूप से जीवन चक्र, परस्पर जुड़ाव और आध्यात्मिक एवं सांसारिक क्षेत्रों के संतुलन के बारे में बताते हैं | समकालीन चरण आज, राठवा भित्ति चित्रकला दो समानांतर रूपों में मौजूद है: पहला पारंपरिक अनुष्ठानिक चित्र जो आज भी घरों में सदियों पुरानी परंपराओं के अनुसार बनाए जाते हैं | दूसरा व्यावसायिक, शैक्षिक और कलात्मक मंचों के लिए बनाए गए समकालीन रूपांतरण | आधुनिकीकरण ने भले ही नई सामग्रियों और दर्शकों को पेश किया हो, लेकिन कला का मूल आध्यात्मिक दर्शन और प्रतीकात्मक संरचना बरकरार है |

राठवा भित्तिचित्रों का दार्शनिक और आध्यात्मिक आयाम

पिथोरा चित्रकला प्रकृति के साथ सामंजस्य और जीवन की निरंतरता पर आधारित विश्वदृष्टि को समाहित करती है: जिसमें मानव-प्रकृति संबंध- सूर्य, चंद्रमा, वनस्पति, जीव-जंतु और ब्रह्मांड का चित्रण अस्तित्व की एकता और चक्रीयता पर बल देता है, जो स्वदेशी जीवन को एक व्यापक ब्रह्मांडीय व्यवस्था का हिस्सा होने का दर्शन प्रदान करता है | दूसरा अनुष्ठानिक पूर्ति और अस्तित्वगत अर्थ- पिथोरा चित्रकला कृतज्ञता का प्रतीक है, प्रतिज्ञा की पूर्ति है और आध्यात्मिक पुष्टि है- यह सामुदायिक पहचान और कल्याण को निर्देशित करने वाली अदृश्य शक्तियों में विश्वास को सुदृढ़ करती है | इस प्रकार, डाक टिकट का जारी होना देश के डाक प्राधिकरण द्वारा इस दार्शनिक गहराई की स्वीकृति का प्रतीक है |

राठवा भित्तिचित्रों का सौंदर्यशास्त्र और संरचना तथा कलात्मक विशेषताएं

माध्यम, शैली और तकनीक घर की तीन दीवारों पर बनाई गई कलाकृतियाँ, अक्सर गोबर, मिट्टी और चूने का उपयोग करके विस्तृत तैयारी (लिपाई) के बाद बनाई जाती हैं | तूलिका पारंपरिक रूप से बांस या अन्य पौधों की सामग्री से बनाए जाते हैं | विशिष्ट रंग: चटख लाल, हरे, नीले, पीले और गेरू रंग, जिनमें से प्रत्येक रंग का प्रतीकात्मक अर्थ होता है | संरचना में अक्सर तीन क्षैतिज स्तर होते हैं: स्वर्गीय लोक, केंद्रीय कथा और सांसारिक या पैतृक लोक | शिल्प संग्रह में कोई भी दो चित्र एक जैसे नहीं होते प्रत्येक चित्र एक व्यक्ति का आध्यात्मिक और सामुदायिक दस्तावेज होता है | स्मृति डाक टिकट पर, यह दृश्य समृद्धि एक लघु, रंगीन प्रस्तुति में समाहित है, जिसका उद्देश्य पिथोरा की कलात्मक गतिशीलता और सांस्कृतिक सार को व्यक्त करना है |

राठवा भित्तिचित्रों का आर्थिक और विरासत पर प्रभाव

पारंपरिक प्रथा और आजीविका ऐतिहासिक रूप से, पिथोरा आदिवासी संस्कृति का अभिन्न अंग था, न कि इसका व्यवसायीकरण | जैसे-जैसे इसे व्यापक मान्यता मिली, कलाकारों ने कैनवास, कागज और व्यावसायिक प्रारूपों पर अपनी कला को बाहरी दर्शकों के लिए अनुकूलित करना शुरू कर दिया, जिससे आर्थिक क्षेत्र में नए अवसर उत्पन्न हुए | सांस्कृतिक संवर्धन में डाक टिकट स्वदेशी कला को राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर बढ़ावा देने वाले सूक्ष्म राजदूतों के रूप में कार्य करते हैं | बढ़ती जागरूकता से बाजार में रुचि, पर्यटन और कला संरक्षण में वृद्धि हो सकती है, जिससे आदिवासी कारीगरों को आर्थिक सहायता मिलेगी और सांस्कृतिक विरासत का संरक्षण होगा |

राठवा भित्तिचित्रों का राजनीतिक और सामाजिक-सांस्कृतिक आयाम

सांस्कृतिक नीति और मान्यता डाक टिकट पर पिथोरा कला को प्रकाशित करना भारत की उस व्यापक नीति के अनुरूप है जिसके तहत राष्ट्र की सांस्कृतिक संरचना में जनजातीय विरासत को मान्यता और समर्थन दिया जाता है | पहचान और प्रतिनिधित्व यह समावेशी राष्ट्रीय पहचान का एक राजनीतिक संदेश देता है, जो जनजातीय कला को हाशिए पर पड़ी लोककथाओं के बजाय भारत की जीवंत विरासत के हिस्से के रूप में मान्यता देता है |

राठवा भित्तिचित्रों की विरासत का संरक्षण

हालांकि डाक टिकट स्वाभाविक रूप से संग्रहणीय वस्तुएं हैं, लेकिन इनकी भूमिका सांस्कृतिक प्रलेखन तक भी फैली हुई है | राठवा भित्तिचित्रों को प्रदर्शित करके, भारतीय डाक प्रणाली इन सांस्कृतिक कलाकृतियों को प्रभावी ढंग से संग्रहित करती है, और आधुनिकीकरण और सामाजिक-आर्थिक परिवर्तनों के दबाव का सामना कर रही एक परंपरा को प्रतीकात्मक रूप से संरक्षित करती है |

राठवा भित्तिचित्रों पर चर्चा: चुनौतियाँ और भविष्य के शोध

इस प्रकार के डाक टिकटों के सांस्कृतिक महत्व के बावजूद, डाक टिकट जारी करने को स्वदेशी विरासत के संवर्धन से सीधे जोड़ने वाले विद्वतापूर्ण दस्तावेज़ीकरण में अभी भी कमियाँ हैं | आगे के अध्ययनों में निम्नलिखित शामिल हो सकते हैं: राठवा समुदायों द्वारा डाक टिकटों पर अपने प्रतिनिधित्व को किस प्रकार देखा जाता है, इस पर नृवंशविज्ञान संबंधी क्षेत्र पर अध्ययन करना | कला-थीम वाले डाक टिकटों के संबंध में संग्राहकों और सांस्कृतिक संस्थानों की प्रतिक्रिया का विश्लेषण करना | भारतीय डाक टिकट संग्रह में अन्य आदिवासी कला स्मारकों (जैसे, वरली, गोंड, चेरियल) आदि अन्य के साथ राठवा भित्तिचित्र डाक टिकट की तुलना करना|

निष्कर्ष

राठवा भित्तिचित्रों पर 1999 का स्मारक डाक टिकट आदिवासी सांस्कृतिक विरासत और राष्ट्रीय डाक टिकट संग्रह प्रथा के महत्वपूर्ण संगम का प्रतिनिधित्व करता है | यह इस बात पर ज़ोर देता है कि डाक प्रणाली वैश्विक स्तर पर स्वदेशी कला का प्रदर्शन करके सांस्कृतिक संरक्षण में कैसे भाग ले सकती है | डाक टिकट संग्रह के माध्यम से राठवा चित्रकला का दस्तावेज़ीकरण और उत्सव मनाकर, इंडिया पोस्ट न केवल एक अनूठी आदिवासी परंपरा का सम्मान करता है, बल्कि राष्ट्रीय पहचान के भीतर जीवंत विरासत की व्यापक कथा में भी योगदान देता है | राठवा भित्तिचित्रों का इतिहास एक जीवंत परंपरा का इतिहास है, न कि किसी स्थिर कला रूप का | प्रागैतिहासिक अभिव्यक्ति से लेकर अनुष्ठानिक प्रथाओं तक, और घरेलू दीवारों से लेकर राष्ट्रीय मुहरों तक, पिथोरा चित्रकला जनजातीय विश्वास प्रणालियों, सांस्कृतिक लचीलेपन और कलात्मक ज्ञान की निरंतरता को दर्शाती है | यह इस बात का सशक्त प्रमाण है कि कैसे स्वदेशी समुदाय सदियों से कला के माध्यम से अपनी पहचान को संरक्षित रखते आये हैं|

REFERENCES

Department of Posts, Government of India. (n.d.). Postage Stamps.
Fuchs, S. (n.d.). Aboriginal Tribes of India. Macmillan.
Gazetteer of India. (n.d.). Gujarat State Gazetteers: Vadodara District. Government of Gujarat.
Grierson, G. A. (1907). Linguistic Survey of India (Vol. 9, Pt. 3). Government of India Central Publication Branch.
Gujarat Tourism. (2026, January 7). Kavant Fair. Government of Gujarat.
Hamir, H., and Wolf, G. (2019). Painting Everything in the World. Tara Books.
Mukerjee, S. V. (1932). Census of India, 1931 (Vol. XIX, Baroda, Pt. I). The Times of India Press.
Pandya, V. (2004). Rathwa Pithoro: Writing About Writing and Reading Painted Ethnography. Visual Anthropology, 17(2), 117–161. https://doi.org/10.1080/08949460490430307
Parekh, K. K. (n.d.). Minor Research Project on Socio-Cultural Ethos as Reflected in the Tribal Songs and Tales of Rathwa Community of Vadodara District in Gujarat (Minor Research Project Report,2–3).
Parikh, V. (n.d.). Pithora Paintings: Survey of a Living Tradition in Historical Perspective.
Potli / Art Bunker (Ed.). (n.d.). Pithora Painting: Folk Art of Gujarat (Do it Yourself Educational Activity kit). Art Bunker / Potli.
Sahapedia. (2026, January 7). Motifs in Pithora Painting.
Sheth, P. (Ed.). (2006). The Dictionary of Indian Art and Artists: Including Technical Art Terms. Mapin Publishing.
Singh, —. (n.d.). Threads Together: A Comparative Study of Tribal and Pre-Historic Rock Paintings.
Singh, C. (1981). Centres of Pahari Painting. Abhinav Publications.
Singh, G. (2022). A Cultural Study of the Rathwas. IOSR Journal of Humanities and Social Science, 27(2, Ser. 6), 46–51.
The Tribune. (2026, January 7). In Sync With Nature.
Tribal Development Department, Government of Gujarat. (2026, January 7). Tribal Demography of Gujarat.